प्रथम पूजा
आठ गुण सहित

कविवर पंडित संतलालजी कृत

श्री सिद्धचक्र विधान पूजा

: मधुर स्वर :

पण्डित सुनीलजी शास्त्री, राजकोट

सुश्री श्वेतल जैन, राजकोट

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

छप्पय

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

ऊरध अधो सु रेफ सबिंदु हंकार विराजे,
अकारादि स्वर लिप्त कर्णिका अन्त सु छाजे।
वर्ग्गनिपूरित वसुदल अम्बुज तत्त्व संधिधर,
अग्रभाग में मंत्र अनाहत सोहत अतिवर।।
पुनि अंत ह्रीं बेढ्यो परम, सुर ध्यावत अरि नाग को।
ह्वै केहरि सम पूजन निमित, सिद्धचक्र मंगल करो।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिन्... अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानम्। ..
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।...
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

दोहा

सूक्ष्मादिक गुण सहित हैं, कर्मरहित निरोग।
सिद्धचक्र सो थापहूं, मिटै उपद्रव योग।।

(इति यंत्रस्थापनार्थं पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

अथाष्टकम्

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

शीतल शुभ सुरभि सु नीर, कंचन कुम्भ भरों।
पाऊँ भवसागर तीर, आनन्द भेंट धरों।।
अन्तरगत अष्ट-स्वरूप, गुणमई राजत हैं।
नमूँ सिद्धचक्र शिव-भूप, अचल विराजत हैं।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः श्री सम्यक्त्व-ज्ञान-दर्शन-वीर्य-सूक्ष्मत्व-अवगाहनत्व-अगुरुलघुत्व अव्याबाधत्वादि अष्टगुणसंयुक्ताय जलं निर्वपामीति स्वाहा।। 1।।

चन्दन तुम वंदन हेत, उत्तम मान्य गिना।
नातर सब काष्ठ समेत, ईंधन ही थपना।।
अन्तरगत अष्ट-स्वरूप, गुणमई राजत हैं।
नमूँ सिद्धचक्र शिव-भूप, अचल विराजत हैं।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः श्रीसम्यक्त्वादि अष्टगुणसंयुक्ताय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

दीरघ शशि किरण समान, अक्षत ल्यावत हूँ।
शशिमंडल सम बहुमान, पूज रचावत हूँ।।
अन्तरगत अष्ट-स्वरूप, गुणमई राजत हैं।
नमूँ सिद्धचक्र शिव-भूप, अचल विराजत हैं।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः श्रीसम्यक्त्वादि अष्टगुणसंयुक्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

तुम चरणचन्द्र के पास, पुष्प धरे सोहैं।
मानूं नखत्रन की रास, सोहत मन मोहैं।।
अन्तरगत अष्ट-स्वरूप, गुणमई राजत हैं।
नमूँ सिद्धचक्र शिव-भूप, अचल विराजत हैं।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः श्रीसम्यक्त्वादि अष्टगुणसंयुक्ताय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

उत्तम नेवज बहु भाँति, सरस सुधा साने।
अहमिन्द्रन मन ललचाय, भक्षण उमगाने।।
अन्तरगत अष्ट-स्वरूप, गुणमई राजत हैं।
नमूँ सिद्धचक्र शिव-भूप, अचल विराजत हैं।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः श्रीसम्यक्त्वादि अष्टगुणसंयुक्ताय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

फैली दीपन की जोति, अति परकाश करै।
जिम स्याद्वाद उद्योत, संशय तिमिर हरै।।
अन्तरगत अष्ट-स्वरूप, गुणमई राजत हैं।
नमूँ सिद्धचक्र शिव-भूप, अचल विराजत हैं।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः श्रीसम्यक्त्वादि अष्टगुणसंयुक्ताय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

धरि अग्नि धूप के ढेर, गंध उड़ावत हूँ।
कर्मों की धूप बखेर, ठोक जरावत हूँ।।
अन्तरगत अष्ट-स्वरूप, गुणमई राजत हैं।
नमूँ सिद्धचक्र शिव-भूप, अचल विराजत हैं।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः श्रीसम्यक्त्वादि अष्टगुणसंयुक्ताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जिन-धर्मवृक्ष की डाल, शिवफल सोहत हैं।
इम धरि फल कंचन थाल, भविजन मोहत हैं।।
अन्तरगत अष्ट-स्वरूप, गुणमई राजत हैं।
नमूँ सिद्धचक्र शिव-भूप, अचल विराजत हैं।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः श्रीसम्यक्त्वादि अष्टगुणसंयुक्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

करि दर्व अर्घ वसु जात, यातैं ध्यावत हूँ।
अष्टांग सुगुण विख्यात, तुम ढिंग पावत हूँ।।
अन्तरगत अष्ट-स्वरूप, गुणमई राजत हैं।
नमूँ सिद्धचक्र शिव-भूप, अचल विराजत हैं।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः श्रीसम्यक्त्वादि अष्टगुणसंयुक्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

निर्मल सलिल शुभ वास चन्दन, धवल अक्षत युत अनी।
शुभ पुष्प मधुकर नित रमैं चरु, प्रचुर स्वाद सुविधि घनी।।
वर दीप माल उजाल धूपायन, रसायन फल भले।
करि अर्घ सिद्ध-समूह पूजत, कर्मदल सब दलमले।।
ते क्रमावर्त नसाय युगपत, ज्ञान निर्मलरूप हैं।
दुख जन्म टार अपार गुण, सूक्षम स्वरूप अनूप हैं।।
कर्माष्ट बिन त्रैलोक्य पूज्य, अदूज शिव कमलापती।
मुनि ध्येय सेय अमेय, चहुँ गुण गेह, द्यो हम शुभमती।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमः सम्यक्त्वादि अष्टगुणसंयुक्ताय अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई

मिथ्या-त्रय चउ आदि कषाया, मोह नाशि क्षायक गुण पाया।
निज अनुभव प्रत्यक्ष सरूपा, नमूँ सिद्ध समकित गुणभूपा।।

ॐ ह्रीं सम्यक्त्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल त्रिधा षट् द्रव्य अनन्ता, युगपत जानत हैं भगवंता।
निर-आवरण विशद स्वाधीना, ज्ञानानंद परम रस लीना।।

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्षु अचक्षु अवधि विधि नाशी, केवल दर्श जोति परकाशी।
सकल ज्ञेय युगपत अवलोका, उत्तम दर्श नमूँ सिद्धों का।।

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तराय विधि प्रकृति अपारा, जीवशक्ति घाते निरधारा।
ते सब घात अतुल बल स्वामी, लसत अखेद सिद्ध प्रणमामी।।

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूपातीत मन-इन्द्रिय नाहीं, मनपर्यय हू जानत नाहीं।
अलख अनूप अमित अविकारी, नमूँ सिद्ध सूक्षम गुणधारी।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक क्षेत्र-अवगाह स्वरूपा, भिन्न-भिन्न राजैं चिद्रूपा।
निज-पर-घात विभाव विडारा, नमूँ सुहित अवगाह अपारा।।

ॐ ह्रीं अवगाहनत्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परकृत ऊँच-नीच पद नाहीं, रमत निरंतर निजपद माहीं।
उत्तम अगुरुलघु गुण भोगी, सिद्धचक्र ध्यावें नित योगी।।

ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्वात्मकजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नित्य निरामय भवभयभंजन, अचल निरंतर शुद्ध निरंजन।
अव्याबाध सोइ गुण जानो, सिद्धचक्र पूजन मन मानो।।

ॐ ह्रीं अव्याबाधत्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जयमाला

(दोहा)

जग आरत भारत महा, गारत करि जय पाय।
विजय आरती तिन कहूँ, पुरुषारथ गुणगाय।।

(पद्धड़ी)

जय करण कृपाण सु प्रथम बार, मिथ्यात सुभट कीनो प्रहार।
दृढ़ कोट विपर्यय मति उलंघि, पायो समकित थल थिर अभंग।।
निज-पर विवेक अंतर पुनीत, आतम रुचि वरती राजनीत।
जग विभव विभाव असार एह, स्वातम सुखरस विपरीत देह।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

नित नाशन लीनो दृढ़ संभार, शुद्धोपयोग चित चरण-सार।
निर्ग्रन्थ कठिन मारग अनूप, हिंसादिक टारण सुलभ रूप।।
द्वयबीस परीषह सहन वीर, बहिरंतर संयम धरण धीर।
द्वादश भावन, दशभेद धर्म, विधि नाशन बारह तप सु पर्म।।
शुभ दया हेत धरि समिति सार, मन शुद्धकरण त्रय गुप्ति धार।
एकाकी निर्भय निःसहाय, विचरो प्रमत्त नाशन उपाय।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

लखि मोहशत्रु परचंड जोर, तिस हनन शुकल दल ध्यान जोर।
आनन्द वीररस हिये छाय, क्षायक श्रेणी आरम्भ थाय।।
बारम गुणथानक ताहि नाश, तेरम पायो निजपद प्रकाश।
नव केवललब्धि विराजमान, दैदीप्यमान सोहे सुभान।।
तिस मोह दुष्ट आज्ञा एकांत, थी कुमति स्वरूप अनेक भाँति।
जिनवाणी करि ताको विहंड, करि स्याद्धाद आज्ञा प्रचंड।।
वरतायो जग में सुमति रूप, भविजन पायो आनंद अनूप।
थे मोह नृपति उपकरण शेष, चारों अघातिया विधि विशेष।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

है नृपति सनातन रीति एह, अरि विमुख न राखे नाम तेह।
यों तिन नाशन उद्यम सु ठानि, आरंभ्यो परम शुकल सु ध्यान।।
तिस बलकरि तिनकी थिति विनाश, पायो निर्भय सुखनिधि निवास।
यह अक्षय जोत लई अबाधि, पुनि अंश न व्यापो शत्रु व्याधि।।
शाश्वत स्वाश्रित सुखश्रेय स्वामि, हे शांति संत ! तुम कर प्रणाम।
अन्तिम पुरुषारथ फल विशाल, तुम विलसौ सुखसौं अमित काल।।

ॐ ह्रीं सम्यक्त्वादि अष्टगुणसंयुक्ताय नमः महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

घत्ता

परसमय-विदूरित पूरित निजसुख समयसार चेतनरूपा।
नानाप्रकार पर का विकार सब टार लसै सब गुणभूपा।।
ते निरावर्ण निर्देह निरूपम सिद्धचक्र परसिद्ध जजूं।
सुर-मुनि नित ध्यावैं आनन्द पावैं, मैं पूजत भवभार तजूं।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु